क्रांतिधर्मी साहित्य-युग साहित्य-इक्कीसवीं सदी का साहित्य

★ ''बेटे, मेरे अब तक के सभी साहित्य का मक्खन है। अभी तक का साहित्य पढ़ पाओ या न पढ़ पाओ, इसे जरूर पढ़ना। इन्हें समझे बिना मिशन को न तो तुम समझ सकते हो, न ही किसी को समझा सकते हो।''.....

★ ''बेटे, ये इस युग की गीता है, युग गीता । एक बार पढ़ने से न समझ आये तो सौ बार पढ़ना। जैसे अर्जुन का मोह गीता से भंग हुआ था, वैसे ही तुम्हारा मोह इस युग गीता से भंग होगा। मेरे जीवन भर का साहित्य शरीर के वजन से ज्यादा भारी है। यदि इसे तराजू के एक पलड़े पर रखें और क्रांतिधर्मी साहित्य को (युग साहित्य को) एक पलड़े पर, तो इनका वजन ज्यादा होगा। ज्यादा समय न मिले तो सार की बातें इन २० पुस्तकों में हैं।''.....

★ ''बेटे, गायत्री महाविज्ञान एक तरफ रख दो, प्रज्ञापुराण एक तरफ रख दो। केवल इन किताबों को पढ़ना।''.....

★ ''बेटे, गीता की तरह नित्य पाठ करना।''.....

★ ''बेटे, सारा साहित्य एक तरफ, ये २० किताबें एक तरफ।''.....

★ ''ये गायत्री महाविज्ञान के बेटे-बेटियाँ हैं, ये (इशारा कर के) प्रज्ञापुराण के बेटे-बेटियाँ हैं। बेटे, (पुरानों से) तुम सभी इस साहित्य को बार-बार पढ़ना। सौ बार पढ़ना और सौ लोगों को पढ़वाना। दुनिया की सभी समस्याओं का समाधान इस साहित्य में है।''.....

★ ''अब तक लिखे सभी साहित्य को तराजू के एक पलड़े पर रखें और इन पुस्तकों को दूसरी पर, तो इनका वजन ज्यादा भारी पड़ेगा। हमारे विचार क्रांति के बीज हैं। इन्हें लागत मूल्य पर छपवाकर प्रचारित प्रसारित करने की सभी को छूट है। कोई कापीराइट नहीं है।''.....

★ ''१९८८-९० तक लिखी पुस्तकें जीवन का सार हैं- सारे जीवन का लेखा-जोखा है। १९४० से अबतक के साहित्य का सार है।''.....

★ ''ये उत्तराधिकारियों के लिए वसीयत है। जीवन को-चिन्तन को बदलने के सूत्र हैं इसमें। गुरु पूर्णिमा से अब तक पीड़ा लिखी है, पढ़ो।'' .....

★ ''हमारे विचार, क्रांति के बीज हैं, जो जरा भी दुनिया में फैल गए, तो अगले दिनों धमाका करेंगे। तुम हमारा काम करो, हम तुम्हारा काम करेंगे।''.....

★ ''शांतिकुंज अब क्रांतिकुंज हो गया है। यहाँ सब कुछ उल्टा-पुल्टा है। सातों ऋषियों का अन्नकूट है।''

★ ''बेटे, ये २० किताबें सौ बार पढ़ना और कम से कम १०० लोगों को पढ़ाना और वो भी सौ लोगों को पढ़ाएँ। हम लिखें तो असर न हो, ऐसा न होगा।''.....

★ ''आज तक हमने सूप पिलाया, अब क्रांतिधर्मी के रूप में भोजन करो।''.....

★ ''प्रत्येक कार्यकर्त्ता को नियमित रूप से इसे पढ़ना और जीवन में उतारना युग-निर्माण के लिए जरूरी है। तभी अगले चरण में वे प्रवेश कर सकेंगे। ''.....

★ ''आवश्यकता और समय के अनुरूप गायत्री महाविज्ञान मैंने लिखा था। अब इसे अल्मारी में बन्द करके रख दो। अब केवल इन्हीं (क्रांतिधर्मी साहित्य को-युग साहित्य को) किताबों को पढ़ना। समय आने पर उसे भी पढ़ना। महाकाल ने स्वयं मेरी उँगलियाँ पकड़कर ये साहित्य लिखवाया है।''.....

★ ''हमारे विचार बड़े पैने हैं, तीखे हैं। हमारी सारी शक्ति हमारे विचारों में समाहित है। दुनिया को हम पलट देने का जो दावा करते हैं, वह सिद्धियों से नहीं, अपने सशक्त विचारों से करते हैं। आप इन विचारों को फैलाने में हमारी सहायता कीजिए। हमको आगे बढ़ने दीजिए, सम्पर्क बनाने दीजिए।''.....

★ ''जैसे श्रवण कुमार ने अपने माता-पिता को सभी तीर्थों की यात्रा कराई, वैसे ही आप भी हमें *(विचार रूप में - क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में)* संसार भर के तीर्थ प्रत्येक गाँव, प्रत्येक घर में ले चलें।''.....

★ वसंत पंचमी १९९० को वं. माताजी से - ''मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना चाहिए और आप सबसे कहियेगा - सब बच्चों से कहियेगा कि **मेरे ज्ञान शरीर को - मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में** जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।''.....

> ''लोग हमें संत, सिद्ध, ज्ञानी मानते हैं। कोई लेखक, वक्ता, विद्वान और नेता समझते हैं, पर किसने हमारा अन्तःकरण खोलकर पढ़ा, समझा है? कोई उसे देख सका होता, तो उसे मानवीय व्यथा-वेदना की अनुभूतियों की करुण कराह से हाहाकार करती एक उद्विग्न आत्मा भर इन हड्डियों के ढाँचे में बैठी-बिलखती दिखाई पड़ती।'' - पं. श्रीराम शर्मा आचार्य

क्रान्तिधर्मी साहित्य की पुस्तकें

❖ इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग १ ❖ इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग २ ❖ युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-भाग १ ❖ युग की माँग प्रतिभा परिष्कार-भाग २ ❖ सतयुग की वापसी ❖ परिवर्तन के महान क्षण ❖ जीवन साधना के स्वर्णिम सूत्र ❖महाकाल का प्रतिभाओं को आमंत्रण ❖ प्रज्ञावतार की विस्तार प्रक्रिया ❖ नवसृजन के निमित्त महाकाल की तैयारी ❖ समस्याएँ आज की समाधान कल के ❖ मनः स्थिति बदले तो परिस्थिति बदले ❖ स्रष्टा का परम प्रसाद-प्रखर प्रज्ञा ❖ आद्य शक्ति गायत्री की समर्थ साधना ❖ शिक्षा ही नहीं विद्या भी ❖ संजीवनी विद्या का विस्तार ❖ भाव संवेदनाओं की गंगोत्री ❖ महिला जागृति अभियान ❖ जीवन देवता की साधना-आराधना ❖ समयदान ही युग धर्म ❖ नवयुग का मत्स्यावतार ❖ इक्कीसवीं सदी का गंगावतरण